2 अगस्त 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अतीन्द्रिय ज्ञानानन्द स्वभावी ध्रुवतत्त्व पर सम्पूर्ण प्रगट ज्ञानशक्ति का केन्द्रीभूत हो जाना ही धर्म की दशा है।

ह्न मैं कौन हूँ ? : पृष्ठ ह्न 9

वर्ष : 31, अंक : 09 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अगस्त (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन का राज. प्रान्तीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण सम्पन्न

मदनगंज-किशनगढ (राज.) : यहाँ आर.के.कम्यूनिटी सेन्टर में दिनांक २० जुलाई, ०८ को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन-राजस्थान प्रान्त का पहला कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ हमीर कॉलोनी स्थित श्री महावीरस्वामी दि. जिन मंदिर में नित्यनियम पूजन के उपरान्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के मार्मिक प्रवचन से हुआ।

मंचासीन बायें से जिनेन्द्र शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा, शुद्धात्मप्रकाशजी, परमात्मप्रकाशजी, उत्तमचन्दजी, पुखराजजी, प्रदीपजी चौधरी, राजकुमारजी

इस अवसर पर आर. के. कम्यूनिटी में आयोजित सभा के मुख्यअतिथि श्री पुखराजजी पहाड़िया-पूर्व जिला प्रमुख एवं भाजपा पंचायत प्रदेश प्रकोष्ठ के अध्यक्ष थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल-मुम्बई, राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल-जयपुर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी-किशनगढ, महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया-मुम्बई, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री पीयूषजी शास्त्री-जयपुर, प्रदेश महामंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री-बांसवाड़ा एवं श्री भागचन्द चौधरी-किशनगढ मंचासीन थे।

अधिवेशन में जयपुर, उदयपुर, कोटा, अलवर, अजमेर, भरतपुर, बांसवाड़ा, भीलवाडा आदि स्थानों से पधारे लगभग २०० पदाधिकारियों ने भाग लिया।

सभी आगन्तुक अतिथियों का अंगवस्त्र, माल्यार्पण एवं तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

प्रशिक्षण का प्रथम सत्र परिचय सम्मेलन के रूप में रखा गया, जिसमें सर्व प्रथम प्रदेशाध्यक्ष श्री उत्तमचन्दजी भारिल्ल एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपजी चौधरी का स्वागत भाषण हुआ। प्रदेश उपाध्यक्ष (उदयपुर संभाग) श्री महावीरप्रसादजी शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष (जयपुर संभाग) श्री संजीवकुमारजी गोधा, प्रदेश उपाध्यक्ष (अलवर संभाग) श्री अजीतजी शास्त्री, प्रदेश उपाध्यक्ष (कोटा संभाग) श्री रतनचन्दजी शास्त्री व प्रदेश प्रचार-मंत्री श्री गणतंत्रजी शास्त्री ने अपने-अपने क्षेत्र से पधारे पदाधिकारियों एवं अपने क्षेत्र में की संचालित की गई फैडरेशन की गतिविधियों का परिचय दिया।

द्वितीय सत्र के अंतर्गत दोपहर में राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पूरे राजस्थान से पधारे फैडरेशन के क्षेत्रीय पदाधिकारियों को फैडरेशन की कार्यप्रणाली संबंधी प्रशिक्षण दिया। राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया-मुम्बई ने बच्चों में धार्मिक संस्कार, एवं महिला फैडरेशन की आवश्यकता को बताया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में फैडरेशन की रीति-नीति, फैडरेशन ही क्यों ? फैडरेशन क्यों नहीं ? आदि बिन्दुओं के आधार से फैडरेशन के संबंध में उठनेवाली लोगों की अनेक प्रकार की शंकाओं का निराकरण किया। साथ ही फैडरेशन द्वारा दिसम्बर माह में होनेवाली दक्षिण यात्रा की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की।

इसी प्रसंग पर बांसवाड़ा जिला प्रभारी पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका ने बांसवाडा जिले की नव-गठित कार्यकारिणी की घोषणा की।

अन्त में प्रदेश महामंत्री पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने अपने धन्यवाद भाषण में शिविर को सफलतम बताते हुये आर.के.मार्बल्स की ओर से प्रशिक्षण के लिये उपलब्ध आर.के.कम्यूनिटी सेंटर हेतु आभार व्यक्त किया। श्री भागचन्दजी चौधरी ने आगन्तुकों के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रदर्शन करते हुये चौधरी परिवार द्वारा भविष्य में भी पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। ज्ञातव्य है कि सम्पूर्ण आयोजन तथा अतिथियों की सर्व प्रकार से व्यवस्था राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार द्वारा की गई।

सम्पूर्ण गतिविधियों का एवं मंच का सफलतम संचालन राज.प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

सम्पादकीय – 11

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

प्रश्न ह्न अकम्पनाचार्य आदि ७०० मुनियों को उनके गले रुंधने से जो सेंवयियों का विशेष आहार दिया गया था। क्या वह उनके लिये उद्दिष्ट आहार नहीं है ?

उत्तर ह्न ऐसी विशेष परिस्थितियों में आगम में अपवाद मार्ग अपनाने का उल्लेख है; अतः वह उद्दिष्ट तो नहीं है, परन्तु सामान्य रूप से तो उत्सर्ग मार्ग अपनाना ही श्रेष्ठ है।

मुनियों के लिए निषिद्ध कार्य ह्न 'शरीर संस्कार न करना ह्न जो अपने शरीर के प्रति भी ममतारहित हैं, ऐसे साधु शरीर के संस्कार नहीं करते जैसे कि ह्न मुख, नेत्र और दांतों का धोना, उबटन करना, अङ्गमर्दन करवाना, मुट्ठी से शरीर का ताड़न करना, कण्ठशुद्धि के लिए वमन करना, औषध आदि से दस्त लेना, तेल से मर्दन करना, चन्दन, कस्तूरी का लेप करना, सलाई बत्ती आदि से नासिकाकर्म (नेति) तथा मल शोधन हेतु एनिमा साधु नहीं करते।

जो निर्दोष सम्यग्दर्शन से विशुद्ध तथा मूल व उत्तर गुणों से संयुक्त हैं, जिनका सुख और दु:ख में समभाव होता है तथा जो आत्मध्यान में लीन रहते हैं, जो अशुभ और शुभ ह्न प्रवृत्तियों के राग से रहित है, वे वीतराग श्रमण हैं एवं जो शुभ प्रवृत्तियों के राग से संयुक्त हैं, वे सराग श्रमण हैं। तथा जो सात तत्त्वों का भेदरूप से श्रद्धान करते हैं तथा भेद-रत्नत्रय की साधना भी करते हैं, पर अभेद अखण्ड एक आत्मद्रव्य का आलम्बन नहीं लेते वे मुनि व्यवहारालम्बी है।[१]

साधुत्रय का सामान्य स्वरूप

१. आचार्य परमेष्ठी ह्न 'जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य ह्न इन पाँच आचारों का स्वयं आचरण करते हैं और दूसरे साधुओं से आचरण कराते हैं तथा स्वसमय और परसमय में पारंगत हैं, मेरु के समान निश्चल हैं, पृथ्वी के समान सहनशील हैं, जिन्होंने समुद्र के समान दोषों को बाहर फेंक दिया है और जो सात प्रकार के भय से रहित हैं।

प्रवचनरूपी समुद्र में स्नान करने से तथा परमागम के परिपूर्ण अभ्यास और अनुभव से जिनकी बुद्धि निर्मल हो गयी है, जो निर्दोष रीति से छह आवश्यकों का पालन करते हैं, जो मेरुपर्वत के समान निष्कम्प हैं, जो शूरवीर हैं, अंतरंग और बहिरंग परिग्रह से रहित हैं, आकाश के समान निर्लेप हैं, जो संघ को दीक्षा देने में कुशल हैं। वे आचार्य परमेष्ठी हैं।'

२. उपाध्याय परमेष्ठी ह्न 'परमागम के व्याख्यान करनेवाले उपाध्याय होते हैं। जो साधु चौदह पूर्वरूपी समुद्र में प्रवेश करके, परमागम का अभ्यास करके मोक्षमार्ग में स्थित हैं तथा मोक्ष के इच्छुक मुनियों को उपदेश देते हैं, उन मुनीश्वरों को उपाध्याय परमेष्ठी कहते हैं।'

३. साधु परमेष्ठी ह्न जो शुद्ध आत्मा के स्वरूप की साधना करते हैं, जो पाँच महाव्रतों को धारण करते हैं, तीन गुप्तियों से सुरक्षित हैं, अठारह हजार शील के भेदों को धारण करते हैं वे साधु परमेष्ठी होते हैं।

आत्मा के ज्ञानपूर्वक वैराग्य होने से, समस्त परिग्रह छोड़कर अन्तर में शुद्धोपयोग द्वारा तीन कषायों का अभाव होने पर मुनिदशा प्रगट होती है।

परद्रव्य में अहंबुद्धि न होने से परद्रव्य को मुनि जानते तो हैं, किन्तु उसे इष्ट-अनिष्ट मानकर राग-द्वेष नहीं करते। अविरत सम्यक्त्वी को भी पर में इष्ट-अनिष्टपने की बुद्धि तो नहीं है, किन्तु उन्हें अभी राग-द्वेष होता है और मुनिदशा में तो वीतरागता प्रगट हो गयी है। अत: वे उनसे ममत्व नहीं करते।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने साधुओं का सामान्य स्वरूप मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रथम अध्याय के प्रारंभ में ही इसप्रकार लिखा है ह्न १. जो विरागी होकर, समस्त परिग्रह छोड़कर, शुद्धोपयोगरूप मुनिधर्म अंगीकार करके, अंतरंग में उस शुद्धोपयोग द्वारा स्वयं अपना अनुभव करते हैं। २. परद्रव्य में अहंबुद्धि नहीं रखते। ३. अपने ज्ञानादिक स्वभावों को ही अपना मानते हैं। ४. परभावों से ममत्व नहीं करते। ५. परद्रव्य तथा उनके स्वभाव ज्ञान में प्रतिभासित होते हैं, उन्हें जानते तो अवश्य हैं; किन्तु इष्ट-अनिष्ट मानकर, उनमें राग-द्वेष नहीं करते। ६. शरीर की अनेक अवस्थाएँ होती हैं; बाह्य में अनेक प्रकार के निमित्त आते हैं, किन्तु वे मुनि वहाँ कुछ भी सुख-दु:ख नहीं मानते। ७. अपने योग्य बाह्य क्रिया जैसी होती है, वैसी होती है; किन्तु उसे खींच-तानकर नहीं करते। ८. वे अपने उपयोग को बहुत नहीं भ्रमाते, किन्तु उदासीन होकर निश्चल वृत्ति को धारण करते हैं। ९. कदाचित् मन्दराग के उदय से शुभोपयोग होता है, जिसके द्वारा वे शुद्धोपयोग के बाह्य साधनों में अनुराग करते हैं, परन्तु उस रागभाव को भी हेय जानकर दूर करने की इच्छा करते हैं। १०. भोजन के त्याग से शरीर को अधिक क्षीण होता जाने तो ऐसा विचार करते हैं कि यदि यह शरीर क्षीण होगा तो परिणामों को शिथिल करेगा और परिणाम शिथिल होंगे तो ध्यान-अध्ययन नहीं सधेगा। इस शरीर से मुझे कोई बैर तो नहीं है, जो इसको क्षीण ही करूँ, मुझे इस शरीर से राग भी नहीं, जो इसका पोषण ही करूँ। इसलिए मुनिराज को शरीर से राग-द्वेष का अभाव होने से जिस कार्य से उनका ध्यान-अध्ययन सधे, वही कार्य करते हैं।'

इसप्रकार मुनिराज पवन, गर्मी, कोलाहल एवं मनुष्य आदि के गमन के स्थानों में जानबूझकर नहीं बैठते हैं। वे वहाँ बैठते हैं, जहाँ ध्यान-अध्ययन से परिणाम च्युत न हों।

हाँ, मुनि के ध्यान में विराजने के पश्चात् यदि कोई उपसर्गादि बाधक कारण प्राप्त हों तो फिर ध्यान को छोड़कर नहीं जाते हैं। शीत ऋतु में नदी के तीर पर ध्यान धारण करते हैं, ग्रीष्म ऋतु में तप्त शिला के ऊपर एवं

पर्वत के शिखर पर ध्यान धारण करते हैं। चातुर्मास में वृक्षों के नीचे ध्यान करते हैं, वे अपने परिणामों की विशुद्धता के अनुसार ध्यान करते हैं।

जब तक मुनिराज के परिणाम ध्यान में स्थिर रहते हैं, तब तक तो ध्यान को छोड़कर अन्य कार्य नहीं विचारते हैं। ध्यान से परिणाम नीचे आयें, तब शास्त्राभ्यास करते हैं एवं दूसरों को कराते हैं तथा अपूर्व जिनवाणी की आज्ञानुसार ग्रन्थ का अवलोकन करते हैं।

ध्यान में उपयोग की स्थिरता अल्पकाल रहती है और शास्त्राभ्यास में उपयोग की स्थिरता बहुत काल रहती है; इसलिए मुनि ध्यान धारण करते हैं, शास्त्र बांचते हैं और उपदेश भी देते हैं। स्वयं भी गुरु से पढ़ते हैं, औरों को पढ़ाते हैं। मूलग्रन्थों के आधार पर नवीन ग्रन्थों को रचते हैं।

समभावी मुनिराज ह्न कोई पुरुष, आकर मुनि को गाली देता है एवं उपसर्ग करता है तो उस पर बिलकुल भी क्रोध नहीं करते; अपितु परम दयालु बुद्धि होने से उसका भला ही चाहते हैं।

वे ऐसा विचार करते हैं कि 'यह भोला जीव है, इसे अपने हित-अहित की खबर नहीं है। यह जीव इन परिणामों से दु:ख पायेगा। मेरा तो कुछ बिगाड़ नहीं है; परन्तु यह जीव संसार-समुद्र में डूबेगा। इसीलिए इसको समझाना चाहिए' ह्न ऐसा विचार कर उपदेश देते हैं।

ऐसे दयालु श्रीगुरु के वचन सुनकर वह पुरुष संसार के भय से कम्पायमान होता हुआ शीघ्र ही गुरु के चरणों में नमस्कार कर अपने किए अपराध की निन्दा करता हुआ क्षमा याचना करता है तो मुनि उसे क्षमादान करते हुए निर्भय करते हैं।

मुनिराज अपने ज्ञानरस में तृप्त हैं, छक रहे हैं; इसलिए बाहर निकलते ही नहीं हैं। पुरुषार्थ की ये कमजोरी के कारण स्वरूप में पूर्णरूप से स्थिर न रह पाये और उपयोग बाहर आ जाता है तो उन्हें यह जगत इन्द्रजालवत् भासित होता है। अत: तत्क्षण ही स्वरूप में चले जाते हैं। इससे उन्हें आनन्द उपजता है और वे हृदय गद्गद् होता है।

कभी तो जगत के जीवों को उनकी जगत से उदासीन गंभीर मुद्रा दिखाई देती है और कभी मानो उन्होंने निधि प्राप्त की हो ह्न ऐसे प्रसन्न मुद्रा प्रतिभासित होती है। मुनिराज की ये दोनों दशाएं अत्यन्त सहज होती हैं।

मुनि को पर में सुख-दु:ख मानने का अभाव होता है। आकुलतापूर्वक पर को जानने नहीं जाते, किन्तु जो परद्रव्य उनके ज्ञान में सहज ज्ञात होते हैं, उन्हें वे जानते हैं; परन्तु उनमें ममत्व नहीं करते और न इष्ट-अनिष्टपना मानकर राग-द्वेष करते हैं।

शरीर की अनेक अवस्थाएँ होती हैं, रोगादि होते हैं और अनेकप्रकार के बाह्य सुख-दु:ख के निमित्त आते हैं, किन्तु वे उनमें किंचित् भी सुख-दु:ख नहीं मानते ह्न ऐसी मुनि की बाह्य दशा होती है।

इन्द्र आकर पूजा करें या सिंह-चीते आकर शरीर को फाड़ खायें, उसमें मुनि सुख-दु:ख नहीं मानते। यद्यपि सम्यक्त्वी भी पर से सुख-दु:ख नहीं मानते, किन्तु मुनि को तो स्वरूप की स्थिरता विशेष होने से अधिक वीतरागता हो गयी है, इसलिए उन्हें हर्ष-शोक भी नहीं होता।

मुनि बाह्य क्रिया खींच-तानकर नहीं करते

अपनी मुनिदशा के योग्य बाह्य क्रिया जैसी होती है, वैसी होती है, किन्तु उसे खींच-तानकर नहीं करते। उदासीनरूप से सहज ही बाह्य क्रिया होती है। इतने समय में मुझे अमुक स्थान तक विहार करना ही पड़ेगा, अमुक प्रसंग पर मुझे बोलना ही पड़ेगा ह्न ऐसी बाह्य क्रिया की बाध्यता मुनि के नहीं होती। यहाँ जो मुनिदशा के योग्य हो ह्न ऐसी बाह्य क्रिया की ही बात है; जो मुनिदशा में योग्य न हो ह्न ऐसी बाह्य क्रियाएँ मुनि के होती ही नहीं हैं।

मुनि अपने उपयोग को बहुत भटकाते नहीं हैं, किन्तु उदासीन होकर निश्चल वृत्ति को धारण करते हैं। तीन कषायों का नाश होने से वीतरागी स्थिरता प्रगट हुई है, इसलिए वे उपयोग लौकिक बातों में नहीं भ्रमाते। जहाँ-तहाँ उपयोग को नहीं ले जाते। यद्यपि अभी स्वरूप में उपयोग पूर्णतया स्थिर नहीं हुआ है, इसलिए बाह्य में भी जाता है; किन्तु उसे अधिक नहीं घुमाते; मुख्यतया तो शुद्धोपयोग की ही साधना करते हैं। मुनियों के शुद्धोपयोग की प्रधानता है और शुभोपयोग गौण है।

शुभोपयोग को उपादेय नहीं मानते

यदि करुणाबुद्धि आती है तो मात्र तत्त्वोपदेश ही देते हैं, लौकिक सुख के साधन नहीं बताते। कदाचित् मन्दराग के उदय से शुभोपयोग भी होता है; परन्तु संज्वलन कषाय के तीव्र उदय में छठवाँ गुणस्थान होता है ह्न ऐसा गोम्मटसार में कहा है, वह निमित्त सापेक्ष कथन है; वास्तव में मुनि को स्वयं वैसी-वैसी निर्विकल्पदशा आती ही रहती है, इसलिए शुद्धोपयोग का प्रयत्न वर्तता ही रहता है।

पंच महाव्रतादि का विकल्प सदैव बना ही रहे ह्न ऐसा नहीं होता। इसलिए कहा है कि कदाचित् मन्दराग के उदय से शुभोपयोग भी होता है। 'भी' कहकर शुभोपयोग की गौणता बतलायी है। मुख्य उद्यम तो शुद्धोपयोग का ही है। शुभोपयोग के समय मुनि शुद्धोपयोग के बाह्य साधनों में ह्न स्वाध्याय, महाव्रतादि में अनुराग करते हैं; परन्तु उस रागभाव को भी हेय जानकर दूर करने की इच्छा रखते हैं।

देखो, यहाँ शुभोपयोग को शुद्धोपयोग का बाह्य साधन कहा है, किन्तु उसे हेय कहा है अर्थात् शुभ को हेय करके अन्तरस्वभाव के अवलम्बन से शुद्धोपयोग प्रगट करे तो उस शुभ को बाह्य साधन कहा जाता है। शुद्धोपयोग का सच्चा साधन तो अन्तरस्वभाव का अवलम्बन ही है।

मुनि को छठवें गुणस्थान में शुभोपयोग होता है, किन्तु उसके आधार से मुनिपना टिकता नहीं है; मुनिपना तो उस समय भी अन्तरस्वभाव के अवलम्बन से होनेवाली वीतरागता से ही टिकता है। मुनिपना संवर-निर्जरारूप है और शुभोपयोग आस्रव है। अतः मुनि उसे हेय जानते हैं।

इसप्रकार आज के उपदेश में मुनिराजों के उत्तरगुणों की चर्चा में निषिद्ध कृतिकर्म, साधुत्रय का स्वरूप, धर्म का मूल सम्यग्दर्शन, समभावी मुनिराज आदि की बात बताई। ॐ नमः। ●

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक २९ जून को प्रथम रविवारीय गोष्ठी **अनेकान्त और स्याद्वाद** विषय पर आयोजित की गई। गोष्ठी की अध्यक्षता टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने की। इसका संचालन अजय शास्त्री ने किया एवं श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सुधीर जैन व विकास जैन को चुना गया। अंत में महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री ने अध्यक्ष का परिचय व आभार प्रदर्शन किया।

दिनांक ६ जुलाई को द्वितीय रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय **सात तत्त्व : एक अनुशीलन था।** इसके अध्यक्ष पण्डित नीतेशजी शास्त्री डडूका थे। गोष्ठी का मंगलाचरण ज्ञायक समैया व संचालन अंकित शास्त्री ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुराग जैन भगवां व अभिषेक जैन मड़देवरा को चुना गया।

दिनांक १३ जुलाई को **पंच परमेष्ठी : एक अनुशीलन** विषय पर तृतीय रविवारीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष कैलाशचंदजी सेठी थे। गोष्ठी का मंगलाचरण कु.अनुभूति जैन ने एवं संचालन विशेष जैन ने किया। रविन्द्र जैन व दीपक मजलेकर श्रेष्ठ वक्ता चुने गये।

दिनांक २० जुलाई को चतुर्थ रविवारीय गोष्ठी **पंचलब्धि : एक अनुचिंतन** का आयोजन किया गया। इसके अध्यक्ष डॉ. दिनेश भाई शहा थे एवं मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. उज्जवला बेन शहा मंचासीन थी। गोष्ठी का संचालन महेश शास्त्री व मंगलाचरण आगम जैन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में जयेश जैन व दीपेश जैन चुने गये।

युवा फैडरेशन भोपाल द्वारा तीर्थ यात्रा

भोपाल (म. प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन भोपाल की कार्यकारिणी द्वारा आयोजित बैठक में वर्ष भर विभिन्न आयोजनों द्वारा तत्त्वप्रचार करने का संकल्प व्यक्त किया गया। इस अवसर पर फैडरेशन के तत्त्वावधान में तीन दिवसीय तीर्थयात्रा आयोजित की गई। इसमें सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी, अतिशयक्षेत्र करगुआजी, नंदीश्वर द्वीप जिनालय खनियांधाना, पचराई व प्राचीन अतिशय क्षेत्र देवगढ़ आदि बुंदेलखण्ड की तीर्थयात्रा फैडरेशन के अध्यक्ष अरुण वर्धमान के नेतृत्त्व में सम्पन्न हुई। इस यात्रा में कार्याध्यक्ष जितेन्द्र सोगानी, रविप्रकाश जैन, अशोक जैन, वीरकुमार, अभिषेक जैन, स्मित जैन, चिन्मय सोगानी ने विशेष रूप से भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त किया।

इस अवसर पर सामूहिक तीर्थ वंदना, पूजा-अर्चना, भक्ति आदि के साथ-साथ सोनागिरजी में पण्डित ज्ञानचंदजी, खनियांधाना में बा. ब्र. पण्डित सुमतप्रकाशजी एवं डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा तत्त्वचर्चा एवं प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

तीर्थ यात्रियों के वापस भोपाल लौटने पर समाज के गणमान्य लोगों के द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की ह्न

नवीन कार्यकारिणी का गठन

किशनगढ़ : यहाँ दिनांक २० जुलाई को आयोजित एकदिवसीय राजस्थान प्रान्तीय प्रशिक्षण के दौरान प्रदेशाध्यक्ष ह्न डॉ. उत्तमचंदजी भारिल्ल, प्रदेश महामंत्री ह्न पण्डित राजकुमारजी जैनदर्शनाचार्य, प्रदेश प्रभारी ह्न पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, प्रदेश प्रचार मंत्री ह्न पण्डित गणतंत्रजी 'ओजस्वी' के सानिध्य में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की नवीन कार्यकारिणी के गठन की घोषणा बाँसवाड़ा जिला प्रभारी ह्न पण्डित रितेश जैन द्वारा की गई। नवीन कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्न

जिलाध्यक्ष ह्न श्री वीरेन्द्र ज्ञायक बाँसवाड़ा, **उपाध्यक्ष** ह्न पण्डित प्रमोद शास्त्री जौलाना व पण्डित मोहित शास्त्री अरथूना, **महामंत्री ह्न** पण्डित आकाश शास्त्री डडूका, **कोषाध्यक्ष ह्न** पण्डित आशीष शास्त्री अरथूना, **सह-कोषाध्यक्ष ह्न** पण्डित निमेष शास्त्री घाटोल, **प्रचारमंत्री ह्न** पण्डित सुदीप शास्त्री घाटोल, **संगठनमंत्री ह्न** पण्डित संजयकुमार परतापुर, **सह-संगठनमंत्री** ह्न पण्डित मनोज शास्त्री डडूका, **सांस्कृतिक मंत्री ह्न** पण्डित अश्विन नानावटी नौगामा, **सह-सांस्कृतिक मंत्री** ह्न पण्डित प्रीतेश शास्त्री रैयाना, **प्रवक्ता ह्न** श्री सुनील शाह बाँसवाड़ा।

परिचय एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर विद्यानिकेतन, नेहरू पुतला में दिनांक ६ जुलाई को जैन समाज के प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन चौधरी, मुख्य अतिथि श्री जयकुमारजी मिर्जापुर तथा विशिष्ट अतिथि श्री शिखरचंद भगवानदास मोदी, श्री आदिनाथजी नखाते, श्री घनश्यामजी मेहता आदि थे।

विद्यालय के अधीक्षक पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री ने विद्यालय का परिचय एवं उद्देश्यों की जानकारी दी। तत्पश्चात् ट्रस्ट द्वारा विद्यालय के छात्रों को अध्ययन किट प्रदान की गई। पुरस्कार वितरण में श्री सुभाष गिरीश मोदी, श्री सोनू जयचंद मोदी, श्री हसमुखलालजी पुणे का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन प्राचार्य श्री विरागजी शास्त्री जबलपुर ने किया।

पाठशाला का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ दिनांक १७ जून, ०८ को पाठशाला का वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित नेमीचंदजी पिड़ावा एवं पण्डित ज्ञानचंदजी डूंगरपुर के उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ। समस्त कार्यक्रमों में पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री व पण्डित राजकुमारजी जैन का सक्रिय सहयोग रहा।

टोडरमल स्मारक में धर्म प्रभावना

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक १५ से २५ जुलाई तक पण्डित दिनेशभाई शहा द्वारा दोनों समय लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका एवं डॉ. उज्जवलाबेन शहा द्वारा तीनों समय कारण-कार्य रहस्य व बीस प्ररूपणा विषय पर कक्षायें ली गई।

इस अवसर पर महाविद्यालय के विद्यार्थियों के अतिरिक्त जयपुर लोकल एवं बाहर से पधारे अनेकों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, उदयपुर की पहल

हिंसा पर अहिंसा प्रेमियों की जीत

उदयपुर की प्रसिद्ध बड़ी तालाब झील में पर्यटकों के माध्यम से **गेमबीट योजना** के अनुसार मछलियाँ पकड़वाने का ठेका दिया जाने वाला था; परन्तु इस समाचार को पढकर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-उदयपुर के कार्यकत्ताओं ने उदयपुर में **सर्वप्रथम** सरकार की इस गेम बीट योजना के विरोध में आवाज उठाई तथा जिला कलेक्टर आलोकजी तथा अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट सिटी राजीव जैन को ज्ञापन सौंपा ।

क्या है गेम बीट योजना ? ह्न इस योजना में पर्यटकों को छह रुपये प्रतिदिन एवं तीन सौ पैंसठ रुपये वार्षिक किराया लेकर डोरी और मंछली पकडने का काँटा प्रदान किया जाना था, जिसके अंतर्गत अब २४ घण्टे सपरिवार बैठकर हिंसा का ताण्डव नृत्य इस के माध्यम से कर सकते थे।

फैडरेशन की सक्रियता ने पूरे उदयपुर में गेमबीट योजना के विरुद्ध माहौल बनाया। फैडरेशन के कार्यकत्ताओं ने राजस्थान सरकार के माननीय गृहमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया से भेंट की ।

जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने गृहमंत्री के समक्ष उदयपुर की सभी झीलों को अभयारण्य की तर्ज पर अभय झीलें घोषित करने की मांग रखी। ज्ञापन में उन्होंने कहा कि वीर भूमि मेवाड जहाँ निहत्थों पर वार करने की परम्परा नहीं है,ऐसे क्षेत्र में पर्यटन को बढावा देने के लिये सरकार द्वारा चलायी जानेवाली गेमबीट (हिंसक) योजना किसी भी रूप में उचित नहीं है। हमें ऐसे पर्यटकों की आवश्यकता नहीं है, जो अपने मनोरंजन के लिये मछलियाँ पकडने अथवा जीव हत्या में रुचि लेते हों।

फैडरेशन सदस्यों ने प्रदर्शन के साथ ही चेतावनी देते हुये कहा कि जबतक यह योजना निरस्त नहीं होगी, तब तक हम सभी भूख-हड़ताल पर रहेंगे।

हर्ष का विषय है कि दिनांक १७ जून को सरकार ने जैन युवा फैडरेशन की भावनाओं का आदर करते हुये 'गेम बीट योजना' के आदेश को तुरंत निरस्त कर दिया।

दिनांक १८ जून को उदयपुर के स्थानीय निवासी एवं राजस्थान के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्र शास्त्री, प्रदेश की महिला संयोजक किरण जैन, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन, जिला प्रभारी पं. खेमचंद जैन, फैडरेशन के संरक्षक श्री कन्हैयालाल दलावत, राजमल गोदणोत, कचरूलाल मेहता, मुमुक्षु मण्डल के शाखा अध्यक्ष सुरेश भोरावत एवं सैक्टर-३ की महिला फैडरेशन अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा जैन ने मत्स्याखेट पर रोक लगवाने हेतु गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया को फैक्स द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया।

उदयपुर फैडरेशन द्वारा मत्स्य हिंसा के विरोध में चार-पाँच दिन चलाये गये इस अभियान की सफलता पर जैन एवं अजैन सभी अहिंसा प्रेमियों ने फैडरेशन के इस कार्य की दिल से सराहना की।

दान राशि प्राप्त

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रशिक्षण-शिविर ध्रुव फण्ड हेतु दादा श्री भगवानजी अंदरजी मेघाणी, दादीश्री रतनबाई मेघाणी, पिताजी श्री गुलाबचन्दजी मेघाणी, माताश्री जयागौरी मेघाणी, फैला. चंपाबेन शिवकुवरबा हस्ते भारती उमेश शाह, उमेश के.शाह घाटकोपर, मुम्बई की ओर से २५,०००/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

१. भीण्डर (राज.) : यहाँ अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर दिनांक १० से १८ जुलाई, ०८ तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अश्विनजी नानावटी तथा पण्डित विवेकजी सागर द्वारा ली गई कक्षाओं व प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। इसी अवसर पर विद्वानद्वय के अथक प्रयासों से नवीन अखिल भारतीय जैन महिला फैडरेशन का गठन किया गया, फैडरेशन की ओर से जैन पथप्रदर्शक को २५१ रुपये की दानराशि प्राप्त हुई।

समाज की ओर से ट्रस्ट को कंठपाठ, शास्त्र प्रकाशन व विद्यार्थियों के विकास हेतु कुल ७५०० रुपये की राशि प्राप्त हुई। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम आप दोनों के निर्देशन में सम्पूर्ण समाज के सहयोग से सम्पन्न किये गये।

२. ग्वालियर - मुरार (म. प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा एवं रात्रि में पण्डित अजितजी अचल, पण्डित शुद्धात्मजी शास्त्री एवं पण्डित विनीतजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। प्रतिदिन जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् पण्डित नीलेश शास्त्री द्वारा बालकक्षा ली गई व अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम अंकित शास्त्री एवं नीलेश शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। समस्त कार्यक्रमों में पण्डित सुनीलजी शास्त्री एवं पण्डित अनुराजजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

३. लूणदा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित गजेन्द्र शास्त्री के तीनों समय मोक्षमार्ग प्रकाशक व समयसार पर हुये प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ साथ ही रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

४. खतौली (उ. प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर बाबा भागीरथजी वर्णी द्वारा संस्थापित १००८ श्री पद्मप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर कानूनगोयान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री राकेशकुमारजी जैन-अम्बर पैलेस थे। ध्वजारोहण श्री प्रवीणकुमारजी महलकेवालों ने किया।

इस अवसर पर डॉ. योगेशचंदजी अलीगंज एवं पण्डित अनुराग शास्त्री के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इस प्रसंग पर टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को लगभग १४,००० रुपये की दानराशि प्राप्त हुई।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम स्थानीय विद्वान सोनूजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित संदीपजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये ।

रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

५. कुंथलगिरि (महा.) : पर्व के अवसर पर हिंगोली से लगभग ८० लोगों का यात्रा संघ कुंथलगिरि पहुँचा। जिन्होंने आठ दिन तक पण्डित कमलचन्दजी जैन पिडावावालों के सान्निध्य में नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया।

इस अवसर पर प्रतिदिन चारों समय पण्डितजी के मोक्षमार्ग प्रकाशक, तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला एवं ज्ञानानन्द श्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि वहाँ से लौटते समय पण्डित के तीन प्रवचन सोलापुर इंजिनियरिंग कॉलेज में तथा एक प्रवचन घाटकोपर-मुम्बई में भी हुआ।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 4

दूसरा प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर चर्चा चल रही है। कल के प्रवचन में प्रथम अधिकार की विषयवस्तु पर प्रकाश डालते हुये कहा था कि यह ग्रंथ मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ है और अब दूसरे अधिकार को '**अब इस शास्त्र में मोक्षमार्ग का प्रकाश करते हैं**', ह्न इस वाक्य से ही आरंभ करते हैं। इससे प्रतीत होता है कि मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ के नाम की सार्थकता उनके हृदय की अथाह गहराई में अंकित थी।

मोक्ष के मार्ग का निर्माण तो तीर्थंकर भी नहीं करते हैं, मार्ग तो स्वयं निर्मित ही है; अतः उसके निर्माण की आवश्यकता भी नहीं है, पर मुक्ति का मार्ग अज्ञानांधकार से आच्छादित है; इसलिए उस पर सम्यग्ज्ञानरूपी प्रकाश डालने की आवश्यकता अवश्य है। यही कारण है कि यहाँ मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डाला जा रहा है।

दूसरे अधिकार के आरंभ में ही वे इस बात पर जोर देते हैं कि वही उपदेश सार्थक हैं, जो मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डाले। तीर्थंकर भगवान भी ऐसा ही उपदेश देते हैं। समवसरण में बैठकर वे दुनियादारी की बातें नहीं सिखाते। सास-बहु को प्रेम से रहना चाहिए ह्न ऐसी बातें करके वे राग करने का उपदेश नहीं देते। वे तो मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र का अभाव कैसे हो, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति कैसे हो; ह्न यह समझाते हैं।

पण्डित टोडरमलजी मनोविज्ञान के बहुत बड़े ज्ञाता थे। उन्होंने मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डालने के लिए परंपरागत रास्ते को नहीं अपनाया।

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र के '**सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः**' इस प्रथम सूत्र में ही आचार्य उमास्वामी ने मोक्षमार्ग की चर्चा आरम्भ कर दी और संसार के दुःखों का वर्णन तीसरे अध्याय में किया; परन्तु पण्डित टोडरमलजी मोक्षमार्ग का प्रकरण नौवें अधिकार से प्रारंभ करते हैं और संसार के दुःखों की चर्चा ग्रन्थ के आरंभ में ही करते हैं।

वे अपनी इस शैली की सार्थकता सिद्ध करते हुये अनेक तर्क देते हैं, उदाहरण देते हैं। वे वैद्य के उदाहरण से अपनी बात को स्पष्ट करते हैं। उनका यह उदाहरण दूसरे अधिकार से पाँचवे अधिकार तक चलता है।

वे लिखते हैं कि जब कोई रोगी वैद्य के पास आता है तो सर्वप्रथम वैद्य उसे रोग का स्वरूप समझाता है, उसकी दुखरूपता समझाता है, उसका कारण बताता है; उसके बाद रोग से मुक्ति का उपाय बताता है। इसीप्रकार पण्डितजी सर्वप्रथम इस संसारी जीव की वर्तमान में जो अवस्था है, वह दुःखरूप है ह्न इसका ज्ञान करायेंगे। उसके बाद उसके होने के कारणों पर प्रकाश डालेंगे; तत्पश्चात् उससे बचने का उपाय बतायेंगे।

रोगी को उसकी तकलीफें बताने के बाद वैद्य यह बताता है कि तुमने क्या-क्या बदपरहेजी की है, जिसके कारण तुम्हें इतनी तकलीफ उठानी पड़ रही है। इसीप्रकार पंडितजी संसार दुखों का स्वरूप बताने के बाद यह बताते हैं कि तुमने मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का सेवन किया है; इसकारण तुझे ये अनन्त दुःख उठाने पड़ रहे हैं।

यदि इन मिथ्यात्वादि से बचना चाहते हो, छूटना चाहते हो तो पहले इन मिथ्यात्वादि का स्वरूप गहराई से समझना होगा।

पण्डित टोडरमलजी अपनी इस कृति को शास्त्र कहते हैं।

जो लोग ऐसा कहते हैं कि शास्त्र तो आचार्य लिखते हैं, पण्डित लोग तो पुस्तकें लिखते हैं, किताबें लिखते हैं। इसप्रकार वे शास्त्र और पुस्तकों में भेद डालते हैं। जो भी हो, पर पण्डित टोडरमलजी अपने इस ग्रन्थ को शास्त्र मानते हैं। उनका मानना है कि यह शास्त्र इसलिए महान नहीं है कि इसे मैंने लिखा है, अपितु इसलिए महान है कि इसमें मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डाला गया है। इसमें वही बात कही गई है, जो गणधरदेव की उपस्थिति में, सौ इन्द्रों की उपस्थिति में तीर्थंकर परमात्मा ने बताई थी, उनकी दिव्यध्वनि में आई थी।

कोई ग्रन्थ महान शास्त्र है या साधारण पुस्तक ह्न इसका निर्णय उसमें प्रतिपादित विषयवस्तु के आधार पर होता है, न कि किसी व्यक्ति विशेष के आधार पर। मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रंथ भी अपनी विषयवस्तु के कारण शास्त्र है, महाशास्त्र है; क्योंकि इसमें आगम के आलोक में, तर्क की कसौटी पर कस कर, स्वानुभव से प्रकाशित करके उसी मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डाला गया है; जिसकी कामना प्रत्येक आत्मार्थी को होती है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के सान्निध्य में रहनेवाले पण्डित श्री खीमचन्दभाई का एक पत्र मुझे प्राप्त हुआ, उसमें लिखा था कि आपने 'क्रमबद्धपर्याय' नामक शास्त्र लिखकर इतना महान कार्य किया है कि दुनिया आपको युगों तक याद रखेगी।

जब मैंने यह लिखा कि आप मेरी पुस्तक को शास्त्र कहते हैं तो उनका उत्तर आया कि यह कृति इसलिए महान नहीं कि इसे आपने लिखा है, अपितु इसलिए महान है कि इसमें जैनदर्शन के एक महान सिद्धान्त का आगमानुसार सयुक्ति प्रतिपादन हुआ है। अत: यह शास्त्र नहीं, महान शास्त्र है।

वस्तुत: बात तो यह है कि चाहे कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा लिखा गया हो, चाहे पंडित टोडरमल आदि विद्वानों द्वारा लिखा गया हो; पर वह सभी साहित्य शास्त्र हैं कि जिसमें आगमानुसार युक्तिसंगत परम सत्य का प्रतिपादन हो और वीतरागता का पोषण किया गया हो।

कुछ लोग भाषा के संदर्भ में भी इसीप्रकार का आग्रह रखते हैं। वे कहते हैं कि शास्त्र तो प्राकृत-संस्कृत में लिखे जाते हैं; पर यह मोक्षमार्गप्रकाशक तो लोक भाषा हिन्दी में लिखा गया है।

अरे भाई ! भाषा तो युग के अनुसार बदलती रहती है। भगवान की दिव्यध्वनि भी तो अठारह महा भाषाओं और सात सौ लघु भाषाओं में प्रस्फुटित हुई थी। उक्त दिव्यध्वनि में समागत तत्त्व को एक-दो भाषाओं में कैसे बांधा जा सकता है ?

पण्डित टोडरमलजी ने हिन्दी भाषा में इसलिए लिखा कि वे सर्वज्ञ कथित वीतराग-विज्ञान को अधिकतम लोगों के पास पहुँचाना चाहते थे। यदि तुम्हारे चित्त में यह विकल्प रहा कि यह ग्रंथ तो पण्डित का

लिखा है, हिन्दी भाषा में है तो तुम इस ग्रंथ से लाभ नहीं उठा सकते; इसलिए इसप्रकार के विकल्पों को छोड़कर तुम इस ग्रंथ का सूक्ष्मता से अध्ययन करो।

एक बात यह भी तो है कि यदि तुम प्राकृत–संस्कृत नहीं जानते हो तो फिर तुम्हें प्राकृत–संस्कृत के ग्रन्थों का स्वाध्याय करने के लिए किसी न किसी पंडित का ही सहारा लेना पड़ेगा, उसके द्वारा किये गये अनुवाद का ही सहारा लेना होगा। यदि स्वयं के स्वाध्याय से कोई बात स्पष्ट नहीं होती तो भी उसे किसी विद्वान से समझना होगा; क्योंकि आचार्यों की उपलब्धि तो सर्वत्र सदा संभव नहीं है। अत: व्यर्थ के विकल्पों से विराम लेकर इस अत्यन्त उपयोगी ग्रंथराज का श्रद्धा के साथ स्वाध्याय करो, तुम्हारा कल्याण अवश्य होगा।

चिकित्सा आरंभ करने के पूर्व बीमारी का निदान करना आवश्यक होता है। निदान के बिना लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। यही कारण है कि इस मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र में सर्वप्रथम कर्मबंधन का निदान करते हैं। उक्त संदर्भ में वे द्रव्य कर्मों का बंधन और मोह–राग–द्वेष रूप भावकर्मों का अनादिपना सिद्ध करते हैं। तात्पर्य यह है कि मोह–राग–द्वेष की बीमारी इस जीव को अनादि से है, कर्मबंधन भी अनादि से ही है। इसकारण सांसारिक सुख–दु:ख भी अनादि से ही हैं। सांसारिक सुख भी दु:ख ही है; अत: यह जीव अनादि से ही इस मोह–राग–द्वेष बीमारी के कारण दुख भोग रहा है।

सोने का उदाहरण देते हुए वे कहते हैं कि जिसप्रकार सोना खदान में अनादि से अशुद्ध पड़ा है; उसीप्रकार यह आत्मा भी निगोद में अनादि से अशुद्ध पड़ा रहा। इसप्रकार उन्होंने यहाँ कर्मरोग का अनादिपना सिद्ध किया है।

यद्यपि यह बात सत्य है कि किसी महिला को देखकर किसी को विकार उत्पन्न हो सकता है, पर प्रत्येक व्यक्ति को नहीं होता; अपितु उन्हीं को होता है, जिनके हृदय में पहले से ही विकार विद्यमान है, उन्हें नहीं जिनका चित्त विकार से रहित है। तात्पर्य यह है कि विकार तो अपनी पर्यायगत योग्यता के कारण स्वयं से होता है; कर्मोदय या बाह्य पदार्थ तो निमित्तमात्र है।

प्रश्न : मोह–राग–द्वेष से कर्मबंधन और कर्मोदय से मोह–राग–द्वेष का होना ह्न इसमें तो इतरेतराश्रय दोष है; क्योंकि द्रव्यकर्मों से भावकर्म और भावकर्मों से द्रव्यकर्म ह्न इसप्रकार परस्पर एक दूसरे के आश्रय से होने को ही तो इतरेतराश्रय दोष कहते हैं ?

उत्तर : नहीं, इसमें इतरेतराश्रय दोष नहीं है; क्योंकि जिन द्रव्यकर्मों के उदय से जो भावकर्म होते हैं, उन द्रव्यकर्मों से वे द्रव्यकर्म भिन्न हैं, जो इन भावकर्मों से बंधनेवाले हैं।

प्रश्न : यह तो समस्या को पीछे धकेलना हुआ, समस्या का समाधान नहीं ? क्यों कि जो मोह–राग–द्वेषरूप भावकर्म अभी हैं, उनका निमित्त पुराने द्रव्यकर्मों का उदय है और वे पुराने द्रव्यकर्म उनसे भी पुराने मोह–राग–द्वेषरूप भावकर्मों के निमित्त से बंधे थे। इसप्रकार तो कभी अंत ही नहीं आवेगा। आखिर कहाँ तक जायेंगे पीछे–पीछे?

उत्तर : अनादि काल तक।

प्रश्न : पहले कौन था ? द्रव्यकर्मों का बंधन या मोह–राग–द्वेषरूप भावकर्म ?

उत्तर : इसका उत्तर तो यही है कि दोनों ही अनादि से हैं। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक जीव अनादिकाल से ही द्रव्यकर्मों के उदयपूर्वक भावकर्मरूप परिणमित हो रहा है। इसप्रकार यह सुनिश्चित है कि द्रव्यकर्म और भावकर्म की परम्परा अनादि से है।

गोम्मटसार में एक गाथा आती है, जिसमें कहा गया है कि ह्न

'जोगा पयड़ि पदेसा ठिदि अणुभागा कसायदो होंति।'

ह्न योग से प्रकृति और प्रदेश बंध होते हैं और कषाय से स्थिति–अनुभाग बंध होते हैं ; किन्तु महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में यह कहा गया है कि ह्न **'मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगा: बंधहेतव:।'**

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग – ये पाँच भावबंध के कारण हैं। अत: यह प्रश्न उपस्थित होता है कि आचार्यों में यह मतभेद क्यों?

महापण्डित टोडरमलजी के ध्यान में यह बात आयी थी और बिना किसी विवाद के उन्होनें बड़ी ही सरलता से उक्त शंका का समाधान कर दिया। वे लिखते हैं ह्न

मोह के उदय से जो मिथ्यात्व और क्रोधादि भाव होते हैं, उद सबका नाम सामान्यत: कषाय है। उनसे उन कर्मप्रकृतियों की स्थिति बंधती है। तथा उस कषाय द्वारा ही उन कर्म प्रकृतियों में अनुभाग शक्ति का विशेष होता है।

ध्यान रहे यहाँ मिथ्यात्व क्रोधादि में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद और कषाय लेना चाहिये। उक्त चारों का नाम सामान्यत: कषाय है। आगे चलकर वे स्वयं कषाय शब्द का प्रयोग उक्त चारों के अर्थ में करते हैं। तात्पर्य यह है कि जब वे यह लिखते हैं ह्न

'जिन्हें बंध नहीं करना हो वे कषाय न करें।'

तब उसका अर्थ यही होता है कि जिन्हें बंध नहीं करना हो, वे मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद और कषाय नहीं करें।

एक बात यह भी तो है कि तत्त्वार्थसूत्र में बंध के मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग ह्न ये पाँच कारण बताये हैं और गोम्मटसार में मात्र कषाय और योग ह्न इन दो को ही बंध का कारण बताया गया है। ऐसी स्थिति में तत्त्वार्थसूत्र में लिखित शेष तीन कारणों को कषाय और योग में ही गर्भित मानना होगा।

योग में तो वे समाहित हो नहीं सकते। अत: उपायान्तर का अभाव होने से उन्हें कषाय में ही शामिल मानना होगा। अत: यह परमसत्य है कि मिथ्यात्व से लेकर कषाय तक के सभी भाव गोम्मटसार के इस प्रकारण में कषाय शब्द में ही गर्भित किये गये हैं। कषाय है अंत में जिनके ऐसे मिथ्यात्वादि सभी भाव कषायभाव ही हैं।

यहाँ कषाय शब्द अंतदीपक के रूप में प्रयोग में आया है। **(क्रमश:)**

2 अगस्त 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

नये युग की आध्यात्मिक क्रांति का उदय

इन्दौर (म. प्र.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान पण्डित सौरभ शास्त्री एवं पण्डित गौरव शास्त्री द्वारा इन्दौर से दिनांक १२ जून से १२ सितम्बर, ०८ तक इन्टरनेट विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग व फोन द्वारा प्रत्येक शनिवार को सायं ७:३० से ८:३० तक छहढाला की कक्षा आयोजित की जा रही है। यू.एस., यू. के., कनाड़ा सहित अन्य देशों में करीब १२५ मुमुक्षु इसका लाभ ले रहे हैं।

इसमें सौरभजी, गौरवजी द्वारा तैयार पावर पॉइन्ट प्रजेन्टेशन तैयार कर सभी मेम्बर्स को भेजी जाती है, बाद में उसी के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है। सभी ढालों की ऑनलाइन परीक्षा भी आयोजित की जायेगी। भारत के मुम्बई शहर में विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग द्वारा डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित क्रमबद्धपर्याय की कक्षा का संचालन सफलतापूर्वक दिनांक २२ जुलाई, ०८ से प्रारम्भ हो चुका है।

भारत तथा विश्व के किसी भी देश से इन कक्षाओं का लाभ लेने हेतु सम्पर्क करें ह्न **E-Mail :** jainsaurabhjain15@gmail.com
dparihantsaurabh@yahoo.co.in

फोन ह्न (0731) 2410540, 09329796325

नोट ह्न कक्षायें हिन्दी व अंग्रेजी भाषाओं में आयोजित की जा रही हैं।

वैराग्य समाचार

१. पीसांगन निवासी श्रीमती आयचुकीबाई ध.प.श्री ताराचंदजी पहाड़िया का दिनांक 2 जुलाई, 08 को देहावसान हो गया। इस दौरान पण्डित अजयजी शास्त्री के 12 भावनाओं पर प्रवचन हुये एवं दिनांक 14 जुलाई को पण्डित अमितजी शास्त्री लुकवासा द्वारा पुखराजजी पहाड़िया के सान्निध्य में शांति विधान का आयोजन किया गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान को 1100 रुपये की राशि प्राप्त हुई है।

२. नागपुर निवासी श्री विश्वलोचनजी जैनी के बड़े भाई **श्री निर्मलकुमारजी जैनी** का ७९ वर्ष की आयु में दिनांक ३० जून को देहावसान हो गया है। आप मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष थे तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुडे हुये थे। आपके निधन से नागपुर जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्रही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

परिचय सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर जग्गा की बावड़ी में दिनांक २७ जुलाई, ०८ को श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में नवीन प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात: ७ बजे जिनेन्द्र पूजन के साथ हुआ। फिर स्वल्पाहार के उपरान्त सभी नवागन्तुक छात्रों ने मंच पर आकर अपना परिचय देते हुये व महाविद्यालय में आने के स्वयं के निर्णय को सार्थक बताते हुये अपने आप को गौरवान्वित बताया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन ब्र.यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्रीमती कमलाबाई भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, श्री कैलाशचन्दजी सेठी ने छात्रों के लिये अपना मार्मिक उद्बोधन दिया।

अन्य विशिष्ट अतिथियों में श्री दिलीपभाई मुम्बई, श्री शांतिलालजी जैन अलवर, श्री ताराचन्दजी सौगाणी, श्री महावीरप्रसादजी सरावगी कोलकाता, पण्डित रमेशचन्दजी दाऊ, श्री सुमतिजी लूणदिया आदि मंचासीन थे।

समारोह में महाविद्यालय के अनेक स्नातक विद्वान भी उपस्थित थे।

अन्त में महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने भूतपूर्व विद्यार्थियों के परिचय के अतिरिक्त जग्गा की बावड़ी क्षेत्र का परिचय देते हुये सभी का आभार प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम का आयोजन/संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों ने किया।

आमंत्रण-पत्र/स्वीकृति शीघ्र भेजें

दशलक्षण महापर्व में प्रवचनार्थ विद्वान बुलाने हेतु जिन मंदिरों/मण्डलों ने अपने आमंत्रण अभी तक नहीं भेजे हैं तो शीघ्र भेजें।

जिन विद्वानों ने अपनी स्वीकृति अभी तक नहीं भेजी है, वे शीघ्र भिजवायें, ताकि दशलक्षण पर्व पर विद्वानों को भेजने की व्यवस्था समय रहते सुव्यवस्थित रूप से की जा सके।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127